अध्याय-2

सुरेश सेन निशांत : जीवन और सृजन

कविता और जीवन को अद्वैत मानने वाले कवि सुरेश सेन निशांत 21वीं सदी के प्रमुख रचनाकारों में गिने जाते हैं। सुरेश सेन निशांत जी का जन्म 12 अगस्त सन् 1959 ई. को हिमाचल प्रदेश के सुदूर पहाड़ी इलाके में मंडी जिले के 'सलाह' नामक ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री कुलदीप सेन और माता का नाम श्रीमति चंपादेवी था। निशांत जी के पिता कुलदीप सेन जी हिमाचल प्रदेश परिवहन निगम में ड्राईवर थे तथा उनकी माता जी एक कुशल गृहिणी होने के साथ-साथ घर के बाह्य कार्यों में भी दक्ष हैं। कुलदीप सेन जी की आय इतनी नहीं थी कि उससे घर का गुजारा हो सके, इसीलिए इनकी माता जी को मजदूरी का काम करना पड़ता था। इनके माता-पिता ने हिमाचल प्रदेश के पहाड़ी जीवन के संघर्षों को देखा, भोगा और झेला था। उन्होंने रोजमर्रा की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विविध प्रकार के कष्टों एवं दुःखों से साक्षात्कार किया। सुरेश सेन निशांत के जीवन में उनके माता-पिता के साथ-साथ उनकी पत्नी और भाइयों के योगदानों को भुलाया नहीं जा सकता।

सुरेश सेन निशांत जी के तीन भाई हैं, दो भाई नौकरी पेशा तथा सबसे छोटे भाई संजय सेन गाँव में ही अपना काम करते हैं। गाँव में रहने के कारण ही वे जीवन-पर्यंत निशांत जी के सुख-दुख में साथ रहे।

सुरेश सेन निशांत का विवाह कविता जी से हुआ था, जिससे उन्हें दो पुत्र प्राप्त हुए। बड़े पुत्र चिराग सेन पानीपत में अपना फाइनेंस-सम्बन्धित व्यवसाय करते हैं तथा वहीं छोटे पुत्र मनीश सेन जीवन बीमा निगम कंपनी रामपुर में कार्यरत हैं। सुरेश सेन निशांत की पत्नी हिमाचल प्रदेश के शिक्षा विभाग में प्राध्यापक के पद पर कार्यरत हैं। जहाँ प्रारंभ में सुरेश सेन निशांत का

जीवन आर्थिक संकटों से घिरा रहा। वहीं बाद का जीवन आर्थिक संपन्नता से भरा रहा। उदार भाव की शिक्षित कुशल गृहिणी होने के कारण उनकी पत्नी ने उन्हें जीवन भर पारिवारिक और घरेलू कार्यों से दूर रखा। इससे निशांत जी अपना पूरा समय साहित्य और समाज को दे सके। इनके अतिरिक्त सुरेश सेन निशांत ने भावुक, संवेदनशील व मिलनसार व्यक्तित्व होने के कारण कुछ अच्छे मित्र भी कमाये थे, जिनमें आत्मारंजन का नाम तो महत्त्वपूर्ण है ही, इसके अलावा एस.आर. हरनोट, केशव तिवारी, अजेय, रजत कृष्ण, महेश पुनेठा, मुरारी शर्मा, कृष्ण चन्द्र महादेविया, भालचन्द्र जोशी, निरंजन देव, विजय सिंह, श्रीनिवास श्रीकांत, मधुकर भारती, मुनीश इत्यादि का सहयोग जीवन और साहित्यिक दोनों जगहों देखा जा सकता है।

सुरेश सेन निशांत सरल एवं सहज स्वभाव के संवेदनशील व्यक्ति थे। इसके साथ ही वह प्रतिभा-सम्पन्न व्यक्ति भी थे। निशांत जी ने अपने पारिवारिक परिवेश व वातावरण को समझते हुए उन्होंने घरेलू स्थितियों को समझा और अपनी मेहनत, लगन और ईमानदारी से दसवीं की परीक्षा पास करके विद्युत संकाय में डिप्लोमा किया। फिर हिमाचल प्रदेश के विद्युत विभाग में कनिष्ठ अभियंता के पद पर नियुक्त हुए। सुरेश सेन निशांत को जीवन में उनके संवेदनशील व्यक्तित्व होने के कारण विभिन्न प्रकार की दिक्कतों का सामना करना पड़ा। लेकिन इन्हें अपने परिवेश व जन के प्रति संवेदनशीलता से ही कवि व्यक्तित्व की प्राप्त हुई। निशांत जी नौकरी के साथ-साथ लेखन का भी कार्य करते थे। प्रारम्भ में जहाँ इन्होंने लगभग पांच वर्षों तक गज़लें लिखीं। वहीं बाद के वर्षों में लगातार कविता लिखते रहे। सुरेश सेन निशांत की लेखन के प्रति ईमानदारी, निष्ठा और प्रसिद्धि ने जहाँ इन्हें और लिखने के लिए प्रेरित किया, वहीं हिमाचल प्रदेश के साहित्य समुदाय से उन्हें उपेक्षा ही प्राप्त हुई। इसी कारण आत्मारंजन निशांत जी के प्रिय मित्र थे जिन्होंने साहित्यिक जीवन में ही नहीं, बल्कि आम जीवन में भी सहयोग किया।

हिमाचल प्रदेश के साहित्यिक समाज द्वारा मिली चोटों और उपेक्षाओं ने सुरेश सेन निशांत को धीरे-धीरे निगल लिया, जिससे उनमें मानसिक विक्षोभ की स्थिति पैदा हुई। इससे आहत होकर उन्होंने लिखा भी था, ''मैं तुम दो-तीन लोगों की ईमानदारी की वजह से ही साहित्य में टिका हुआ हूँ, वरना इन लोगों की टुच्ची हरकतों के कारण मैं तो कभी का आउट हो गया होता ।''[1]

सुरेश सेन निशांत इन षड्यंत्रों का शिकार होते रहे और धीरे-धीरे मानसिक विक्षोभ के कारण 22 अक्टूबर सन् 2018 ई० को कल के गाल में समा गये। वे जीवन भर मुक्तिबोध के समान ही अन्धेरे में रहकर भी समाज को प्रकाश की ओर ले जाने का कार्य करते रहे। उनका बचपन आर्थिक संकटों से घिरा रहा। उनके माता-पिता गरीब एवं आर्थिक रूप से कमजोर थे लेकिन उन्होंने अपने कठिन श्रम के द्वारा अपनी सभी जरूरतों को पूरा किया। सुरेश सेन निशांत को बचपन से ही अपनी माता जी से अथाह प्रेम था, वे अपनी माताजी के संरक्षण में पले-बढ़े। इसीलिए वे कठिन परिश्रम के साथ-साथ भावुक, संवेदनशील, विनम्र एवं मिलनसार व्यक्तित्व के धनी हुए । निशांत जी ने बचपन से ही अपनी माता जी को श्रमिकों की भाँति काम करते हुए देखा है, जो घरेलू आवश्यकताओं को पूरा करने के साथ-साथ वे दुर्गम पहाड़ों में दूर-दूर तक श्रम करने के लिए कोसों की पैदल यात्रा करती थीं। हिमाचल प्रदेश की श्रमिक स्त्रियाँ श्रम के लिए वहाँ खेतों, जंगलों, कारखानों में काम करने जाया करती थीं। वहाँ ठेकेदारों और हाकिमों द्वारा शोषण का शिकार होना पड़ता था। इस दुख और ऊब भरे जीवन के बावजूद अपने श्रम द्वारा वे परिवार की आवश्यकताओं को पूरा करती रहीं। एक ओर जहाँ उनमें परिवार के प्रति तड़प थी, वहीं दूसरी ओर शोषक ठेकेदारों की आततायी प्रवृत्तियों के बीच रहकर जीवनयापन करने की समस्या थी। ऐसी विकट स्थिति में सुरेश सेन निशांत की माता जी उन्हें हमेशा अपने साथ रखती थीं। सुरेश सेन निशांत दारुण व करूण स्थितियों के बीच पले-बढ़े। भालचन्द्र जोशी

अपने लेख 'कविता के घर में मनुष्यता का रहवास' में उस पहाड़ी लोक-जीवन में स्त्रियों की करुणा एवं दुख भरी गाथा सुनाते हैं। वे लिखते हैं, ''निशांत जी को अपनी माँ की त्रासदी और दुख के बीच समस्त पहाड़ी स्त्री के दुख की चिंता थी। उन्हें अपने जीवन, अपने जंगल, अपने वृक्षों पर असीम आस्था एवं विश्वास था।

"चुपचाप गुजरों / इन वृक्षों के पास
प्रार्थनारत है यहाँ एक औरत / उसे विश्वास है
इस वृक्ष में बसते हैं देवता
और वे सुन रहे हैं उसकी आवाज।''[2]

इसमें सुरेश सेन निशांत का अपने पहाड़ी लोक जीवन के विभिन्न तत्वों में गहन आस्था और विश्वास को देखा जा सकता है। वहीं सुरेश सेन निशांत ने श्रमिक जीवन की करुण एवं दारूण स्थितियों के साथ-साथ हिमाचल प्रदेश की सुंदर विस्तृत एवं बर्फीली घाटियों के सौन्दर्य को देखा और महसूस किया था। प्रकृति के गोद से पले-बढ़े होने के कारण सुरेश सेन निशांत का उन पहाड़ों, नदियों, पेड़-पौधों, जल जंगल जमीन एवं वहाँ के लोकजीवन से गहरा लगाव था। यह लगाव जुनून की इस हद तक था कि उनकी गति में ही इनका जीवन था। वह उनकी धड़कनों व रागों को सुन सकते थे, महसूस कर सकते थे। भूमण्डलीकरण, बाजारवाद, उदारवाद पूँजीवादी और औद्योगिकरण के कारण इस पहाड़ी लोक जीवन को विकास के नाम पर तहस-नहस किया जा रहा है, जिससे वहाँ का पहाड़ी-जीवन और पहाड़, निर्जन होते जा रहे हैं। वे एक कविता के माध्यम से बताते हैं कि अब किस तरह से नव युवाओं के मन में पहाड़ का दृश्य/बिम्ब बन रहा है जिसमें पहाड़ पेड़-पौधों से निर्जन हो गये हैं। अब उन पर बिजली के खम्भे और नदियों पर बाँध के बिम्ब दिखाई देते हैं :

''ये कितनी बड़ी विडम्बना है/ इस कठिन समय में

पहाड़ का एक आसान-सा चित्र / नहीं बन पा रहा है
एक छोटी-सी बच्ची से / उसे नहीं आ रहा है ख्याल
पहाड़ों पे वृक्ष बनाने का। वह चिड़ियों को
नहीं दे पा रहा है अपने उस चित्र में जगह
उगता सूरज / घुमड़ते बादल कुछ भी नहीं।
पहाड़ों की नंगी / देह पर / उकेरे हैं उसने
बिजली के बड़े-बड़े टावर / और चुपचाप चली गई
उस चित्र को वहाँ छोड़।''[3]

विभिन्न विद्वानों का मानना है कि किसी भी रचनाकार के व्यक्तित्व का निर्माण उसके समकालीन परिवेश और परिस्थितियों से निर्मित होता है। कुछ विद्वान रचना के केन्द्र में केवल मूलपाठ को केन्द्र में रखकर उसके व्यक्तित्व को उस पाठ से अलगाते हैं। उत्तर संरचनावादी इसके पक्षधर हैं। लेकिन विधेयवादी किसी भी रचनाकार का मूल्यांकन उसके समय और समाज से अलग रखकर नहीं करते। इसीलिए हमें किसी भी रचनाकार की रचनाओं का अध्ययन करने से पहले उसके समय, समाज और उसके व्यक्तित्व को जान लेना आवश्यक है। यह उसके कृतित्व को जानने एवं समझने के लिए एक नया आयाम खोलता है।

सुरेश सेन निशांत बचपन से ही प्रतिभा के धनी भावुक एवं संवेदनशील इंसान तो थे ही, उससे पहले वे एक बेहतर मनुष्य थे। जिसमें उनकी बहुत छोटी और भोली इच्छायें निश्छल भाव से झलकती थीं। उनकी इन इच्छाओं में निजता की कामनाओं से ज्यादा पहाड़ी लोकजीवन के हितों की कामना थी। आत्मारंजन अपने मित्र सुरेश सेन निशांत के साथ बिताये गये पलों को याद करते हुए उनकी इंसानियत को उजागर करते हैं और लिखते हैं, ''खुशियों और उदासियों के कितने ही भरपूर पल हमनें साथ गुजारे हैं। वह खुशियों और उदासियों को

भरपूर जीने वाला इंसान था। फरिश्ता न ही था न ही संत। वह एक भावुक और संवेदनशील इंसान था। मनुष्यगत खूबियों और खामियों से भरा एक सच्चा पक्का-सा इंसान। तमाम खुशियों और उदासियों को दोस्ती और दुश्मनी को बहुत गहराई से महसूस करने वाला। वह कुछ अधिक भावुक कुछ अधिक संवेदनशील। कुछ अधिक मनुष्य कुछ अधिक कवि। ये अधिक होना ही उसके लिए घातक बनता गया। वह छोटी-छोटी खुशियों पर बहुत आह्लादित बहुत खुश हो उठता और छोटी-छोटी ईष्याओं या दुर्भावनाओं से बहुत आहत, बहुत परेशान।''[4]

भारतीय गाँव छल-कपट आदि प्रपंचों से दूर निश्चल एवं आत्मीय भाव से संपन्न परिवेश के लिए जाने जाते हैं। सुरेश सेन निशांत भी एक ऐसे पहाड़ी लोक-परिवेश में पले-पढ़े जहाँ मनुष्यता का निवास है। यहाँ अभी बाजारवाद धीरे-धीरे घुसपैठ कर रहा था और पूँजीवाद का प्रभाव तेजी से बढ़ता जा रहा था। निशांत जी को इस परिवेश में पले-बढ़े होने के कारण यहाँ की नदियों पेड़-पौधों, जीव-जन्तुओं, जल, जंगल, जमीन और पर्यावरण के प्रति एक गहरा लगाव था। इस लगाव का जुनून इस हद तक था कि इसे उनके हृदय की धड़कनें स्पष्ट रूप से महसूस कर सकती थीं। प्रकृति का हरा भरापन जहाँ उन्हें आह्लादित करता था, वहीं उन पर गहराता-संकट उनमें मानसिक विक्षोभ की स्थिति पैदा करता था।

इनकी सजीवता जहाँ उनमें जीवन का संचार करती थी, वहीं उसकी गति से इसमें जीवन का संचार होता था। सुरेश सेन निशांत नदियों की व्यथा को महसूस करते हुए उन पर गहराते संकट पर प्रश्न उठाते हैं। वे उनसे प्रश्न-वाचक शैली में संवाद करते हैं। भूमण्डलीकरण और बाजादवाद ने विकास के नाम पर ऐसी विकट स्थिति पैदा कर दी है कि न केवल नदियाँ, अपितु सम्पूर्ण जीवन संकट में आ गया है। जीवन की सहजता और स्वाभाविकता पर खतरा मंडराने लगा है। नदी की इसी पीढ़ी को कवि सुरेश सेन निशांत ने प्रश्नवाचक शैली में अभिव्यक्त किया है जिसमें उनके जीवन के स्पंदन को महसूस किया जा सकता है। वे लिखते हैं :

‘‘तुम्हारे इस खदले हुए जल में

मछलियाँ क्या अब भी वैसा ही चालाकी भरा

बच्चों को छकाने जैसा

खेल खेलती रहती है नदी?

------ ------- -------

क्या तुम बूढ़ी हो रही हो नदी?

क्या तुम्हें भी हो रही है चलने

और साँस लेने में तकलीफ

क्या तुम भी हमारी तरह

एक दिन मर जाओगी नदी?’’[5]

सुरेश सेन निशांत की कविता इन्हीं पारिस्थितिकीय असंतुलन को संतुलित करने की कवायद सिखाती है।

सुरेश सेन निशांत ने बचपन से ही देखा था कि किस प्रकार उनकी माँ और गाँव के लोग अथक परिश्रम से घर की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करते रहे। जिसके लिए उन्हें अलग-अलग प्रकार के शोषणों और परेशानियों से गुजरना पड़ता है। इन्हीं सब स्थितियों ने कवि सुरेश सेन निशांत को जनवाद की ओर प्रेरित किया। सुरेश सेन निशांत की कविताओं के केन्द्र में समाज के शोषित एवं प्रताड़ित स्त्रियों एवं हाशिए के लोगों की आवाजों को स्वर दिया है। यह तीखा प्रतिरोध उनके जीवन का कठोर अनुभव है।

सुरेश सेन निशांत का व्यक्तित्व अत्यन्त आत्मीय एवं मिलनसार स्वभाव का रहा है, इसी स्वभाव के कारण ही उन्होंने अपने जनपद में एक अलग प्रकार का साहित्यिक व सामाजिक माहौल तैयार किया, जिससे अनेक नवयुवा कवियों एवं प्रतिभाओं को निखारने में सहयोग

मिला। सुरेश सेन निशांत अपने मित्रों के प्रति ईमानदार और सचेत थे। जब कोई मित्र शिमला की सैर करने आता तो उसकी अच्छी-सी खातिरदारी करते और उससे आत्मीयता के साथ मिलते थे। वह उनकी सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए उनके साथ अपना अनुभव भी बांटते थे और कभी-कभी आवश्यकता पड़ने पर आर्थिक सहायता भी प्रदान करते थे। इस विषय में उनके ही मित्र भालचन्द्र जोशी उनके साथ अपने पहले मिलन का अनुभव बताते हुए लिखते हैं, ''हम लोग पहली बार मिल रहे थे लेकिन उनकी आवाज में बरसों पुराने रिश्ते की आत्मीयता की गूंज थी।''[6]

भालचन्द्र जोशी अपने संस्मरण का वर्णन करते हुए लिखते हैं, "कुछ बरस पहले मैं मनाली घूमने गया था। वापसी में मुझे शिमला जाना था। मैंने सुरेश सेन निशांत को फोन किया कि मैं मण्डी होते हुए जाऊँगा, क्या मुलाकात संभव है? उधर से एक बच्चों जैसी पुलक से भरी आवाज आयी, ''जरूर! बस मनाली से निकलने का समय और टैक्सी नम्बर बताएं।.....मैं जब मण्डी पहुँचा तो अचरज और शर्म से भर गया कि निशांत सड़क के किनारे खड़े थे। टैक्सी नम्बर देखकर उन्होंने टैक्सी रुकवायी, तब मुझे पता चला कि वे पिछले एक घण्टे से ज्यादा समय से खड़े थे।"[7]

सुरेश सेन निशांत पर लिखे गये स्मृति लेखों में भी उनकी आत्मीयता और मिलनसारता को देखा जा सकता है। निशांत तथा उस साहित्यिक समुदाय के लोगों ने मिलकर रचनाधर्मिता को एक नया आयाम दिया, जिसमें निशांत के अलावा आत्मारंजन, एस.आर.हरनोट, केशव तिवारी, अजेय, मुनीश, श्रीनिवास श्रीकांत, कृष्ण चन्द्र महादेविया, मधुकर भारती, मुरारी शर्मा, महेश पुनेठा, विजय सिंह, विषु, अपूर्वा, भालचन्द्र जोशी व रजत कृष्ण इत्यादि का नाम लिया जा सकता है। वरिष्ठ कथाकार एस.आर. हरनोट सुरेश सेन निशांत की स्मृतियों को याद करते हुए लिखते हैं कि सुरेश सेन निशांत एक ऐसे भावुक, संवेदनशील और मिलनसार मित्र थे

जिनकी स्मृतियों को भुलाया नहीं जा सकता। वे लिखते हैं, ''निशांत उन चंद दोस्तों में से था जिससे बात करने में बहुत अपनापन लगता था। ऊर्जा मिलती थी। नयी सोच और उस सोच को और परिपक्व होते रहने की प्रेरणा मिलती थी।....''[8]

एस०आर०हरनोट सुरेश सेन निशांत को कविता में भी याद करते हुए लिखते हैं :

''वह मन से नहीं जाता/आँखों से नहीं जाता
शब्दों का कारीगर था, साँसों से/नहीं जाता...'' [9]

सुरेश सेन निशांत अपने गाँव सलाह में बहुत भाईचारे के साथ रहते थे। सभी से बातचीत करना और तादात्म्य स्थापित करना उनका स्वभाव था। यह कार्य वे बहुत ही कुशलतापूर्वक करते थे। वे अपने गाँव के शिक्षित-अशिक्षित सभी लोगों से बातचीत करते और उन्हें कविता सुनने के लिए आग्रह करते थे। इस आग्रह को वे बहुत ही आदणीय भावों से स्वीकार करते थे। एस.आर. हरनोट इस सम्बन्ध में लिखते हैं, ''गाँव की औरतें घास-पत्तियों और पानी-पनीहार को आती जाती, निशांत के घर के बाहर से चुपचाप उदास कनखियों से आंगन में निहार लेती है कि अभी कोई आवाज लगायेगा, ''भाभी ! चाची! बैठी लैओ थोड़ी देर, नई कविता लिखी मैं तुसा सुवनी नी आज।'' [1०]

सुरेश सेन निशांत अंतर्मुखी स्वभाव के व्यक्ति थे। जिन्हें बचपन से ही कविता के प्रति गहरा लगाव था। इसीलिए उनके जीवन, उसमें समाज व साहित्य के प्रति अद्भुत निष्ठा और कर्मशीलता दिखाई देती है। वह साहित्य सेवा के माध्यम से पत्र-पत्रिकाओं को जन तक स्वयं पहुँचाते थे। सुरेश सेन निशांत ने आठवीं कक्षा में ही अपनी पहली कविता लिखी। जिसका प्रकाशन जनप्रदीप नामक क्षेत्रीय दैनिक अखबार में हुआ जिसमें उनके मित्र शंकर का सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान था। निशांत जी ने दसवीं पास करके विद्युत-संकाय में डिप्लोमा किया और विद्युत विभाग में कनिष्ठ अभियंता के पद पर नौकरी कर ली। वे नौकरी के साथ-साथ गज़ले

भी लिखा करते थे। लेकिन बाद में किसी मित्र के द्वारा हिंदी साहित्य की प्रतिष्ठित पत्रिका 'पहल' दी गयी। उसे पढ़कर वे बहुत प्रभावित हुए, यहीं से उनमें कविता में पठन-पाठन और लेखन की कला विकसित हुई। यहीं से उन्हें साहित्य और कला को नये ढंग से देखने समझने और चिंतन करने का दृष्टिकोण मिला। वह लिखते हैं, ''पहल को पढ़ना, उसके बीच से गुजरना एक अद्वितीय अनुभव था... मैं आज की कविता की बनक देखकर हैरान रह गया। मैं पहल के माध्यम से ही नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल और त्रिलोचन जी के पास पहुँचा।''[11]

सुरेश सेन निशांत को काव्य-क्षेत्र में उतरने की प्रेरणा उन्हें 'पहल' पत्रिका से मिली। जिसके माध्यम से इन्हें केदारनाथ अग्रवाल के काव्य-संग्रह की भूमिका पढ़ने को मिली। उन्हें अपनी समस्याओं का बहुत कुछ निवारण इस भूमिका से मिला। इस भूमिका को उन्होंने लगभग पचास बार पढ़ा होगा। मानो उस भूमिका ने उन्हें निराशा के गहन अंधेरे से निकाल कर नई रोशनी में बिठा दिया हो। भूमिका में लिखा है ''बहुत पहले मैं जो लिखना चाहता था वह नहीं लिख पाता था, कठिनाइयाँ होती थी। कविता नहीं बन पाती थी। कभी एक पंक्ति बन पाती थी। कभी अधूरी ही पड़ी रह जाती थी, तब मैं अपने में कवित्व की कमी समझता था। खीझ कर रह जाता था औरों दूसरों को धड़ल्ले से लिखते देखकर अपने ऊपर क्षुब्ध होता था। मौलिकता की कमी महसूसता था। तब मैं यह नहीं जानता था कि कविता भीतर बनी बनायी नहीं रहती। मैं समझता था कि वह कवि के हृदय में, मस्तिष्क में सहज संवरे रूप में पहले से रखी रहती है। प्रतिभावान कवि उसे भीतर से बाहर ले आता है। कितना गलत था मेरा विचार, कि गलत थी मेरी मौलिकता की धारणा।''[12]

सुरेश सेन निशांत के कवि व्यक्तित्व के निर्माण में पत्र-पत्रिकाओं का महत्त्वपूर्ण स्थान है। जिसने उन्हें अन्य कवियों जैसे केदारनाथ अग्रवाल नार्गाजुन त्रिलोचन ने प्रभावित किया तथा राजेश जोशी, मंगलेश डबराल, विजेन्द्र, आलोक धन्वा, कुमार अम्बुज, एकान्त

श्रीवास्तव, केदारनाथ सिंह, विष्णु खरे, भगवत रावत, उदय प्रकाश ज्ञानेंद्रपति आदि की रचनाओं ने इन्हें संस्कारित किया।

सुरेश सेन निशांत इक्कीसवीं सदी के रचनाकार हैं, जिनमें बाजारवाद और प्रायोजित पुरस्कार का अभाव है। इसीलिए वे पुरस्कार के लिए रचना नहीं करते। वे उदय प्रकाश को अच्छा कवि मानते हुए साथ ही उनके व्यक्तित्व को भी नकारते हैं। पुरस्कार लेने पर नकारते हैं, उनके व्यक्तित्व को। वे सृजन के क्षेत्र में भ्रम फैलाने वाले पुरस्कारों व अभिजन वर्ग का विरोध करते हैं जो पुरस्कार और उपहार के माध्यम के कला-मूल्यों के क्षरण में सहयोगी है। इन्हीं प्रेरणाओं से सुरेश सेन निशांत ने पूरी निष्ठा, ईमानदारी और कर्मठता से अपने समाज की विसंगतियों को उजागर करते हुए अपने समाज के हाशिए के लोगों की पीड़ा को स्वर दिया है।

सुरेश सेन निशांत जनवादी जनपदीय कवि है जिन्होंने पहाड़ी लोक-जीवन के मूल्यों को संजीवन देने का काम किया। वे कविताओं के माध्यम से आंतरिक लय को महत्ता प्रदान कर महत्त्वपूर्ण योगदान देते हैं। हिमाचल प्रदेश के जिन कवियों ने राष्ट्रीय स्तर पर काव्यानुगूंज की टंकार को चहुँओर फैलाया है, उनमें सुरेश सेन निशांत, आत्मारंजन, अजेय इत्यादि का नाम महत्त्वपूर्ण है। समकालीन हिंदी कविता में सुरेश सेन निशांत की पहचान एक जनवादी कवि के रूप में है, जिन्होंने पहाड़ी लोक जीवन की विसंगतियों को उजागर किया है। वे एक ओर आदिम-सम्बन्धों में हो रहे बदलाव को बचाने की कोशिश करते हैं वहीं दूसरी ओर वे विस्थापित लोगों की व्यथा को भी स्वर देते हैं।

सुरेश सेन निशांत जीवन और सृजन को एक मानते हैं। कहानीकार मुरारी शर्मा निशांत जी की काव्य के प्रति निष्ठा और प्रेम पर मोहित होकर लिखते हैं, ''सुरेश सेन निशांत ने कविता को महज लिखा ही नहीं, बल्कि उसको संजीदगी से जिया भी है। जुनून की हद तक वे कविता के प्रति समर्पित थे।'' [13]

इसीलिए वे जीवन में रस के साथ-साथ कविता के रस को भी बचाना चाहते हैं। इसके लिए वे काव्य की गद्यात्मकता व वैचारिकता को भावगत रूप में प्रकट करने के पक्षधर हैं तथा काव्य की आंतरिक-लय को केन्द्र में रखते हैं। इसी कारण इनकी कविता की भाषा अत्यन्त सहज व सरल है जो पाठकों को दूर तक संवेदित करती है।

सुरेश सेन निशांत एक ऐसे समाज की परिकल्पना करते हैं जहाँ जीवन में सादगी हो, ईमानदारी, कर्मठता और लोकतांत्रिक मूल्यों जैसे स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व का भाव हो। वे एक-दूसरे के प्रति संवेदनशील और सहायता करने के लिए तत्पर हों। इसके लिए उन्होंने हिमाचल प्रदेश में एक साहित्यिक समाज का निर्माण किया तथा अन्य लोगों जैसे आत्मारंजन, एस.आर.हरनोट इत्यादि के साथ अपना भरसक योगदान दिया।

लेकिन हर समाज में जिस प्रकार सदैव असामाजिक तत्व मौजूद रहते हैं, उसी तरह इस साहित्यिक समाज में भी असामाजिक तत्व सम्मिलित थे, जो लालच, पुरस्कारों की गन्दी एवं टुच्ची राजनीति के लिए अपना ईमान बेचते फिरते थे। वे अपनी प्रगति या प्रसिद्धि के लिए किसी भी हद तक गिर सकते थे। जो दूसरों की प्रतिभा को देखकर जलते थे, वे साहित्य की सुरेश सेन जैसी प्रतिभाओं को पनपने नहीं देना चाहते थे।

सुरेश सेन निशांत अपने काव्य संग्रह 'कुछ थे जो कवि थे' (2015) में उनकी इसी टुच्ची राजनीति, पूर्व डाहों और कवियों के अनपेक्षित चरित्रों को केन्द्र में रखकर उनका व्यंग्य के माध्यम से पर्दाफाश करते हैं :

''वे जब तिकड़ में करते / या किसी अच्छी रचना की
हत्या की सुपारी लेते या देते
तो जरा भी अपराध बोध से
ग्रस्त नहीं होते / यह उनके व्यक्तित्व का

असाधारण पॉजिटिव गुण था''[14]

इसके अलावा उन अवसरवादी कवियों पर भी तंज कसते हुए उनके व्यवहार को रेखांकित करते हैं और लिखते हैं :

''पर वे उन रास्तों पर भी
सम्भल-सम्भल कर चलते थे
जहाँ दौड़ा जा सकता था।
वे उस सभा में भी
गुपचुप रहा करते थे
जहाँ आतताइयों के ख़िलाफ़
बोला जाना चाहिए
एक आध शब्द जरूर।''[15]

सुरेश सेन निशांत के व्यक्तित्व को उन्होंने बहुत ठेस पहुंचायी । कहानीकार एस.आर.हरनोट सुरेश सेन निशांत की मनोव्यथा को समझते और जानते हैं। इसीलिए वे अनुभव बाँटते हुए लिखते हैं, ''निशांत सेवानिवृत्ति के बाद जिस-प्रतिबद्धता से कविता के क्षेत्र में कार्य करना चाहते थे। इन बेरंगी मिजाजों ने उसे जरूर प्रभावित किया। सोचता हूँ वर्तमान की जो परिस्थितियाँ और भगुवा ठाठ इन विभागों की संगोष्ठियों में मिलना दिख रहा है, जिसमें साहित्य नदारद और भगुवे गीत अधिक सुनाई दे रहे हैं तो उसे देखकर निशांत और भी आहत होते। हम तो यह तमाशा रोज-रोज देखने के आदी हो गए हैं।''[16]

सुरेश सेन निशांत इन साहित्यिक माफियाओं का विरोध आक्रोश के साथ करते हैं। जिसे एस.आर. हरनोट जी ने रेखांकित किया है, ''निशांत ने बहुत आहत होकर गुस्से में आगे लिखा कि इन लोगों को साहित्य की एक दुनिया में न होकर वन माफिया या खनन माफिया के

साथ कंधे से कांधा मिलाकर राजनीति में अपनी जगह बनानी चाहिए... बेचारे यूँ ही अपनी प्रतिभा को साहित्य की दुनिया में जाया कर रहे हैं।'' [17]

सुरेश सेन निशांत की इसी साहित्य और समाज के प्रति संवेदनशीलता ही उनकी जान की दुश्मन बनी। इसी कारण 22 अक्टूबर 2018 को उन्हें इस दुनिया से अलविदा कहना पड़ा।

सुरेश सेन निशांत का कविता के प्रति झुकाव आठवीं कक्षा में दिखाई दिया जिसमें उन्होंने एक कविता की रचना करके अपने मित्र शंकर की सहायता से उसे दैनिक अखबार 'जन प्रदीप' में छपवायी। इसीलिए उन्हें पूरे कॉलेज में बधाई और हौसला-अफजाई मिली। इससे उनका काव्य के प्रति रुचि उजागर करती है।

सुरेश सेन निशांत ने लेखन कार्य सन् 1986 ई. में प्रारम्भ की। वे लगभग पाँच साल तक ग़जल लिखते रहें। लेकिन 'पहल' ने उनका जीवन बदल दिया। वहीं से प्रेरणा और सीख लेकर वे काव्य के क्षेत्र में उतरे। धीरे-धीरे उनकी कवितायें देश की विभिन्न प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं जैसे- पहल, कृतिओर, हंस, आलोचना, सूत्र, सर्वनाम, समकालीन भारतीय साहित्य, उद्भावना, लमही, वर्तमान साहित्य, वागर्थ, परिकथा, बया, आधरशिला, कथाक्रम इत्यादि में छपी।

सुरेश सेन निशांत को पहचान उनके काव्य-संग्रह 'वे जो लकड़हारे नहीं हैं' और 'कुछ थे जो कवि थे' से मिली। निशांत के इन काव्य संग्रहों को काफी प्रसिद्धि मिली। इसके अलावा उनका एक और काव्य-संग्रह छपकर आने वाला था लेकिन निशांत जी की मृत्यु के कारण वह प्रकाशित नहीं हो सका। सुरेश सेन निशांत ने काव्य-सृजन के अलावा वर्ष 2010 में 'आकण्ठ' पत्रिका का 'हिमाचल की समकालीन कविता' विशेषांक का भी कुशल सम्पादन किया।

सुरेश सेन निशांत काव्य-पाठ हेतु काव्य-सम्मेलनों में जाया करते थे। उन्हें एक बार काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में काव्य-पाठ के लिए भी आमंत्रित किया गया था। इसके अलावा

सुरेश सेन निशांत को छत्तीसगढ़ में आयोजित कवि-सम्मेलन में केदारनाथ सिंह द्वारा 'प्रफुल्ल स्मृति सम्मान' से सम्मानित किया गया है।

इसके अतिरिक्त उन्हें 'हिंदी साहित्य का कविता पुरस्कार' वर्ष 2007 से 2012 के बीच प्रकाशित काव्य संग्रह पर हिमाचल प्रदेश कला संस्कृति भाषा अकादमी द्वारा वर्ष 2017 में सम्मानित किया गया। इस प्रकार हम देखते हैं कि जहाँ सुरेश सेन निशांत का व्यक्तित्व हमें प्रेरणा प्रदान करता है उनकी रचनायें हमें पर्यावरण के साथ-साथ हमें अपने समय एवं समाज से सचेतन रूप जोड़ती है।

संदर्भ :

1. हरनोट, एस.आर; लेख; बया, सं० गौरीनाथ, अंतिका प्रकाशन, सी -56/यूजीएफ-4 शालीमार गार्डन, एक्सटेंशन -2 गाज़ियाबाद -201005(उ०प्र०); अक्टूबर 2018-मार्च 2019; पृ. 9.
2. शर्मा, भालचंद्र; लेख; कथादेश, सं० हरिनारायण; एल-57 बी, दिलशाद गार्डन, दिल्ली-110095, दिल्ली; अक्टूबर 2018; पृ. 9.
3. श्रीधरम; लेख; बया, सं० गौरीनाथ, अंतिका प्रकाशन, सी -56/यूजीएफ-4 शालीमार गार्डन, एक्सटेंशन -2 गाज़ियाबाद -201005(उ०प्र०); अक्टूबर 2018-मार्च 2019; पृ. 20.
4. रंजन आत्मा; लेख; कथादेश, सं० हरिनारायण, एल-57 बी, दिलशाद गार्डन, दिल्ली-110095, दिल्ली; अक्टूबर 2018; पृ. 11.
5. निशांत, सुरेश सेन; कुछ थे जो कवि थे; अंतिका प्रकाशन, सी -56/यूजीएफ-4 शालीमार गार्डन, एक्सटेंशन -2 गाज़ियाबाद -201005 (उ०प्र०); पृ.73-74.
6. जोशी, भालचन्द्र; लेख; कथोदश, सं० हरिनारायण; एल-57 बी, दिलशाद गार्डन, दिल्ली-110095, दिल्ली; अक्टूबर 2018; पृ. 8.
7. वही।
8. हरनोट, एस.आर; लेख; बया, सं० गौरीनाथ, अंतिका प्रकाशन, सी -56/यूजीएफ-4 शालीमार गार्डन, एक्सटेंशन -2 गाज़ियाबाद -201005(उ०प्र०); अक्टूबर 2018-मार्च 2019; पृ. 6.
9. वही; पृ. 6.
10. वही; पृ. 13.
11. प्रसाद, भरत; साक्षात्कार (भरत प्रसाद की सुरेश सेन निशांत से बातचीत); अनहद (सं. संतोष चतुर्वेदी), चित्रकूट (उ.प्र.).
12. वही; पृ. 45.
13. शर्मा, मुरारी; लेख; बयां, सं० गौरीशंकर, अंतिका प्रकाशन, सी -56/यूजीएफ-4 शालीमार गार्डन,एक्सटेंशन -2 गाज़ियाबाद -201005(उ०प्र०);अक्टूबर-2018 मार्च 2019; पृ. 15.
14. निशांत, सुरेश सेन; कुछ थे जो कवि थे; अंतिका प्रकाशन, सी -56/यूजीएफ-4 शालीमार गार्डन, एक्सटेंशन -2 गाज़ियाबाद -201005(उ०प्र०); अक्टूबर-2018-मार्च 2019 संस्करण: 2015; पृ. 44.
15. वही; पृ. 43.
16. हरनोट, एस.आर.; बया, सं० गौरीशंकर, अंतिका प्रकाशन, सी -56/यूजीएफ-4 शालीमार गार्डन, एक्सटेंशन -2 गाज़ियाबाद (उ०प्र०); अक्टूबर 2018- मार्च 2019; पृ. 19.
17. वही; पृ. 9.